दिसम्बर 2017

वर्ष 30 पंचम् अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 असफलता की आशंका, सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान

13 आर्थिक परिदृश्य

19 राष्ट्रीय परिदृश्य

21 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

26 क्रीड़ा जगत्

31 विविध योजनाएं—बिहार सरकार की नवीनतम योजनाएँ

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 सारभूत तत्व कोष

41 युवा प्रतिभाएं

लेख

43 समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिक लेख—चीन की 'वन बेल्ट वन रोड' (OBOR) और रेशम मार्ग परियोजना तथा उससे जुड़ी चुनौतियाँ

45 साहित्यिक लेख—हिन्दी के विकास का इतिहास एवं राजभाषा कार्यान्वयन

47 सैन्य लेख—नाटो का पूर्व की ओर बढ़ता विस्तार

48 पर्यावरण लेख—पर्यावरण संरक्षण

हल प्रश्न-पत्र

50 रेलवे भर्ती बोर्ड गैर-तकनीकी (एनटीपीसी) परीक्षा, 2016

57 बिहार शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2017 [प्रथम प्रश्न-पत्र : कक्षा I से V तक]

66 उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय ग्रुप 'C' परीक्षा, 2017

73 एस.एस.सी. मल्टी टास्किंग (गैर-तकनीकी) स्टाफ परीक्षा, 2017

82 छत्तीसगढ़ प्री. बी.एड. परीक्षा, 2017

88 हरियाणा परिचालक भर्ती परीक्षा, 2017

93 बिहार एस.एस.सी. इण्टरमीडिएट स्तरीय प्रारम्भिक परीक्षा, 2017

101 मध्य प्रदेश जेल विभाग, कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं राज्य वन विकास निगम लि. भोपाल संयुक्त भर्ती परीक्षा, 2017

106 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक भर्ती परीक्षा, 2017

विविध/सामान्य

114 विविध जानकारी (i) छत्तीसगढ़ राज्य में पंचायती राजव्यवस्था के अन्तर्गत संचालित एवं क्रियान्वित होने वाली योजनाएं

117 (ii) मध्य प्रदेश में पंचायती राज

123 वार्षिक रिपोर्ट 2016-17—पर्यावरण क्षेत्र में अनुसंधान, विकास एवं प्रोग्राम्स/स्कीम्स की प्रमुख उपलब्धियाँ—एक दृष्टि में

127 क्या आप परिचित हैं ?

128 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

असफलता की आशंका, सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

'शंका' डर व औपचारिकता को जन्म देती है. जो आशंका वह अपने पथ पर काँटे बिछा रहा है. 'शंका' क्यों होती है ?

1. भूतकाल के अनुभवों के कारण—हो सकता है ये दुःखद अनुभव आपके स्वयं के हों अथवा आपसे सम्बन्धित किसी अन्य व्यक्ति के, किन्तु आप उन अनुभवों को, जोकि आज अतीत का हिस्सा बन चुके हैं, उनकी नजरों से आज को मत देखिए. आज पूरा फ्रेश दिन आपके हाथ में है. क्यों डरते हैं असफलता से ? असफलता मिल भी गई तब भी अच्छा सोचिए. सोचिए कि आपने सफलता के लिए कुछ प्रयास तो किया था. लाखों लोग ऐसे हैं कि कल कहीं गिर न जाऊँ, इस डर के मारे चढ़ने का उद्यम ही नहीं करते, किन्तु आप अपने या किसी अन्य के पुराने अनुभवों को स्मृति पटल से झटक कर अलग कर दीजिए. स्वयं को तीन बार गहरे मन में कहिए कि—''मैं अपने अनुभवों के कोष से हर दुःखद भूत की स्मृतियों को अलग करता हूँ.'' मैं योग्य हूँ. अपनी इष्टसिद्धि के लिए सर्वथा योग्य हूँ. मेरी योग्यता मेरा आत्मविश्वास है और मेरा आत्मविश्वास ही मेरी सच्ची योग्यता है. मैं अपने आपको समर्पित हूँ. मेरा सम्पूर्ण समर्पण ही मेरी सच्ची सफलता है. भूत के अनुभवों से सीख लीजिए और उन्हें अपने से विलग कर आगे बढ़ जाइए. कल तक जो सिद्धि आपको नहीं हुई, वह आज और अभी हो सकती है, इस विश्वास को अपने भीतर पनपाइए.

2. तुलना के कारण—आशंका पैदा होने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण है 'तुलना करने की आदत जिसके कारण आप खुद पर विश्वास नहीं कर पाते. आपको लगता है कि जब वो इंसान 6 साल में अपनी कम्पनी को बुलंदियों पर ले कर जा सका और मैं इन 6 सालों में अब तक कुछ न कर सका ..... तो अब आगे भला क्या ही कर लूँगा. आप दूसरों से खुद को तौलकर स्वयं को अक्षम तो नहीं मान बैठे हो. सम्भव है आप अन्यों की असफलताओं से अपने लिए आशंकित बन बैठे हो. किन्तु आपको इस तथ्य को जेहन में अवश्य रखना चाहिए कि हम सबके कर्म अलग-अलग हैं. सबकी प्रकट क्षमताएं भी जुदा-जुदा हैं. ऐसे में सबमें हर प्रकार का कौशल भी तो नहीं होतीं. अगर कोई व्यक्ति बहुत प्रयास करके भी असफल हुआ है, तो आप परेशान मत होइए आपकी सफलता आपके अपने आत्म-विश्वास, लगन, धैर्य व समुचित अभ्यास में निहित है. सिविल सेवा परीक्षाओं की सफलता की ओर आशा से देखने वाले अनगिनत युवा इस आशंका से घिर जाते हैं कि इन परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लाखों लोग प्रारम्भिक परीक्षा में बैठते हैं, उनमें से कुछ ही मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करके साक्षात्कार देते हैं. चयन केवल कुछ सौ अभ्यर्थियों का ही हो पाता है. ऐसे में जब 99 प्रतिशत या उससे अधिक असफल हो गए तो मेरा प्रयास करना भी निरर्थक है. ऐसी सोच ही उनके भविष्य को अन्धकारमय बना देती है. देखना ही है तो उन्हें देखिए जो मात्र स्नातकस्तरीय परीक्षा उत्तीर्ण करके पहले ही प्रयास में उच्च रैंक पाकर आई.ए.एस. हो गए. असफलता की आशंका से सफलता का मार्ग खोजने से घबराना श्रेष्ठ व्यक्तित्व की निशानी नहीं है. एक लुटेरा अपने प्रयासों से संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान बनकर रामायण जैसे महाकाव्य की रचना कर वाल्मीकि बन सकता है. प्लेटफार्म पर चाय बेचने वाला किशोर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र—भारत का प्रधानमंत्री बन सकता है. असफलता की आशंका को छोड़कर असफलता से भी सीख लेने वाली दृष्टि विकसित कीजिए. इस दुनिया में कोई भी सफलता प्राप्त व्यक्ति कभी-न-कभी असफल भी अवश्य हुआ है. अतः आप भी सतत् कर्मवीर बने रहिए—

●●●